महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का सांची बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के भूमि पूजन समारोह में उद्बोधन

स्थान :- सांची (जिला रायसेन) दिनांक :- 21 सितम्बर, 2012 समय :-

सर्वप्रथम मैं देश के ह्मदय प्रदेश- मध्यप्रदेश में और बौद्ध धर्म के स्तूपों की नगरी सांची में श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री महिन्दा राजपक्षे और भूटान के प्रधानमंत्री श्री ल्योंं जिग्में थिनली का बहुत-बहुत आत्मीय स्वागत करता हूं।

मध्यप्रदेश शासन सांची में बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन का विश्वविद्यालय आज स्थापित करने जा रहा है। इसके शिलान्यास एवं भूमि पूजन का आज का यह अवसर शांति और समरसता की बौद्ध विचार की अवधारणा को सच्चे अर्थों में रूपायित करने वाला एक मील का पत्थर साबित हो, उसके हम सभी साक्षी हैं। यह महान अवसर है जब श्रीलंका के राष्ट्राध्यक्ष एवं भूटान के प्रधानमंत्री हमारे साथ यहां पर अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति के साथ हमारे इस विनम्र और दूरदृष्टता उपक्रम को अपनी शुभकामनायें प्रदान करने पधारे हैं और हमारे बीच हमारे मनोबल को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के निकट स्थित सांची का महत्व विश्व स्तर पर संस्कृति, इतिहास, परम्परा और कालातीत महत्व की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सांची इतिहासिक और पुरातात्विक महत्व का वह अनूठा केन्द्र है, जिसमें देश-दुनिया के विलक्षण विद्वानों, अध्येताओं और जिज्ञासुओं को आकृष्ट करने वाला गौरव प्राप्त है। सम्राट अशोक ने कोई 2300 वर्ष पहले शांति और सद्भाव के प्रतीक विशाल स्तूप का निर्माण कराया था। बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर उन्होंने भगवान बुद्ध के संदेश को समूचे मानव तक पहुंचाने का अप्रतिम कार्य किया। यह स्तूप भगवान बुद्ध के प्रति श्रद्धा आदर और समर्पण का प्रतीक है।

सांची प्राचीनकाल से ही बौद्ध धर्म के प्रचार, शिक्षा और अध्ययन-अवलोकन का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है। यहां पर बौद्ध कला की सर्वोत्तम विधियां समूचे विश्व की अपेक्षा, अपने अधिक महत्व के साथ विद्मान हैं। मध्यप्रदेश शासन ने सांची के विकास, ऐतिहासिक और पुरातात्विक धरोहर को सहेजने में सदैव एक बड़े नैतिक और सांस्कृतिक महत्व का परिचय दिया है।

भारत पुरातन ज्ञान और विज्ञान के आधार पर विश्व गुरू के गौरवमय पद पर प्रतिष्ठित रहा है। धर्म ग्रंथों और पुरातन साहित्य तथा योग शिक्षा के रूप में ज्ञान का अपार भंडार है जिसमें

स्वस्थ्य और सुखी मानव जीवन जीने की कला और समाज कल्याण का अथाह ज्ञान है। संसार का सबसे पुराना साहित्य वेद हमारी विरासत है। सदियों की यात्रा में ज्ञान का कोई क्षेत्र हमारे चिन्तकों से अछूता नहीं रहा है। आज की दुनिया वैश्वीकरण के सन्दर्भ में मानवता के जिस समग्र विकास की ओर बढ़ रही है, उस विचार का सूत्रपात हमारी महान सभ्यता में सदियों पहले हो गया था।

भारतीय चेतना ने मानव जीवन में संस्कारों का महत्व भलीभांति समझा है। गुणों को धारण करना या दोषों को दूर करना संस्कार शब्द का अर्थ है। संस्कार-सम्पन्न होने पर ही जीवन, मूल्यवान बनता है। जीवन मूल्यों की प्राप्ति हेतु स्वयं को समर्पित करने के लिए भारतीय आचार्य-परम्परा का सनातन उपदेश-बीज तैत्तिरीय उपनिषद् में उपलब्ध है।

बौध धर्म भारत की श्रवण परम्परा से निकला धर्म और दर्शन है। आज बौध धर्म सारे संसार के चार बड़े धर्मों में से एक है। भगवान बुद्ध प्रज्ञा व करूणा की मूर्ति थे। उन्होंने अहिंसा और सत्य को जीवन में प्रधानता दी। उनका धर्म रहस्य और आडम्बरों से मुक्त मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत और ह्मदय को सीधे स्पर्श करता था। उनका कहना था कि दुख निवारण के लिए सत्य की खोज आवश्यक है। भगवान बुद्ध के समस्त उपदेशों का अंतिम लक्ष्य एक ही था वह था आमजनों को दुखों से मुक्ति की ओर ले जाना। बौद्ध धर्म बाहय से अंतर में उतरकर जीवन के सत्य को तलाशने के प्रयत्न की उपलब्धियों को समझने का अवसर देता है।

आज सबसे बड़ी आवश्यकता है बौद्ध धर्म और भारतीय ज्ञान के संरक्षण और संवधर्न की है। आवश्यकता इस अमूल्य और प्रकृति से जुड़े ज्ञान को धरोहर के रूप में आगामी पीढ़ी के लिए दस्तावेजीकरण कर रखने की है। साथ ही जन कल्याण हेतु इस ज्ञान को अपनाने की जरूरत है।

मध्यप्रदेश में इस ज्ञान को शिक्षा में सम्मिलित कर इसके उत्थान का यह प्रयास किया जा रहा है। सांची को विद्या और संस्कृति के एक ऐसे केन्द्र के रूप में विकसित होते देखने की अभिलाषा है जहां भारतीय युवा परम्परा के साथ अविभक्त परिवेश में आधुनिक प्रज्ञा की प्रतिष्ठा करते हुए ज्ञान की दिशा में अग्रसर हो सकें। अनेकता में एकता की भारतीय संस्कृति के अनुरूप और नवयुग की परिस्थितियों के अनुकूल देश के योग्य नागरिक तैयार करने में यह विश्वविद्यालय समर्थ हो, हम सबकी यही सद्इच्छा है।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही धर्म और धम्म विषय पर दो दिन के व्यापक विचार-सत्र का आरम्भ कल से होने जा रहा है। 22 एवं 23 सितम्बर को विधानसभा में आयोजित हो

रहे इस सत्र में देश- दुनिया के प्रकांड विद्वान, बौद्ध विचारक, अध्येता, विश्लेषक पधार रहे हैं जो आने वाले समय में हमारे देश की ज्ञान परम्परा और समरसता के परिप्रेक्ष्य को अपने विचारों की अनमोल सम्पदा से शांति और सद्भाव की मौलिक अवधारणा प्रतिपादित करने का काम करेंगे। हम उनका भी हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और मध्यप्रदेश में, विशेषकर भोपाल में उनका स्वागत करते हैं।

जय हिन्द।